RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • NOVEMBER 2018 • PAGES 8 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

विद्यार्थियों ने पांच दिवसीय शैक्षिक भ्रमण के साथ सीखे प्रबधंन के गुण

जोधपुर मेहरान गढ किला के मुख्य द्वार पर टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के छात्र -छात्राएं और बीच में डा. वन्दना राघव

जैसलमेर किला स्थित राज-सिंहासन की सीढियों पर बैठे छात्र-छात्राएं एंव डा.वंदना राघव

टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के छात्र-छात्राएं पश्चिम राजधानी दुग्ध उत्पाद सहकारी सघं लिमिटेड (सरस डेयरी) के प्रबधंन के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए

दिल्ली, 04 नवबंर, 2018

रोहिणी स्थित टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के एमबीए, बीबीए और पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों का पांच दिवसीय शैक्षिणक भ्रमण दिल्ली–जोधपुर–जैसलमेर–दिल्ली सकुशल संपन्न हुई। इस शैक्षणिक भ्रमण कार्यक्रम के तहत विद्यार्थियों को जोधपुर, जैसलमर और राजस्थान का रेगिस्तान सहित अन्य स्थानों का दौरा कराया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने राजस्थान के विभिन्न पर्यटन स्थलों का दौरा करके उनके बारे में समग्र जानकारी हासिल की। इसके साथ ही साथ पश्चिम राजधानी दुग्ध उत्पाद सहकारी सघं लिमिटेड (सरस डेयरी) और राजस्थानी लोक कला और कलाकारों के बारे में विस्तार से सुनने और जानने का अवसर मिला। डॉ. राम कैलाश गुप्ता, चेयरमैन, टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज ने शैक्षणिक भ्रमण के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इससे विद्यार्थियों को समग्र ज्ञान मिलता है। लोक संस्कृति को प्रत्यक्ष देखने का एक सुअवसर मिलता है। उन्होंने कहा कि किताबें ही सारे ज्ञान को प्रदर्शित नहीं करती है अपितु भ्रमण तथा स्वयं सीखकर ज्ञान प्राप्त करना अच्छा अनुभव होता है। भ्रमण का उद्देश्य केवल मनोरंजन ही नहीं है अपितु इसके साथ हमारे देश की समृद्ध संस्कृति से परिचय कराना है। उन्होंने कहा कि अनेक प्रकार के ऐतिहासिक स्थानों के महत्त्व के बारे में ज्ञान प्रदान करना तथा विभिन्न महत्त्वपूर्ण स्थानों को देखकर अपना बौद्धिक विकास करना भी है। संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. ए. के. श्रीवास्तव ने कहा शैक्षणिक भ्रमण शिक्षा प्रक्रिया का एक अहम पहलू है। संस्थान के डायरेक्टर डॉ. अजय कुमार राठौर ने कहा कि शैक्षणिक भ्रमण से विद्यार्थियों में वास्तविक ज्ञान का विकास होता है। छात्रों में एक अनुभूति जागृत होती है, जिससे वे भारत की विभिन्नताओं जैसे इतिहास, विज्ञान, शिष्टाचार और प्रकृति को व्यक्तिगत रूप से जान सकते है इसके अतिरिक्त छात्रों में समूह में रहने की प्रवृति, नायक बनने की क्षमता तथा आत्मविश्वास एवं भाई–चारे की भावना प्रबल होती है। भ्रमण एक ऐसी विधा है जो विद्यार्थियों में कॉलेज में बिताए गए समय में सबसे रोचक और यादगार पलों को ताउम्र याद कराता रहता है। डॉ. वंदना राघव ने कहा कि भ्रमण से विभिन्न ऐतिहासिक स्थलों को देखकर हम पुरानी सभ्यता, कला, संस्कृति एवं परम्पराओं के बारे में भी ज्ञान प्राप्त करते हैं। भ्रमण में हमें विभिन्न परिस्थितियाँ प्राप्त होती हैं उन सब में सामंजस्य करना होता है। संग में यात्रा हो तो उसका भी अलग ही अनुभव होता हैं। डॉ. शम्भू शरण गुप्त, असिस्टेंट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने कहा कि यह शैक्षिणक भ्रमण पत्रकारिता एवं जनसंचार के विद्यार्थियों में फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी स्किल को विकसित करने में सहायक है। फीचर राइटिंग के साथ किसी विशेष विषय पर किसी से किस प्रकार से साक्षात्कार किया जाए, उसकी व्यवस्थित रूप–रेखा को समझने का अवसर मिला है। राजस्थानी लोक कला और संस्कृति को प्रत्यक्ष रूप से देखने और समझने का एक सुअवसर मिला है जिसे अभी तक सिनेमा के पर्दों पर ही देखा करते थे। भ्रमण के दौरान विद्यार्थियों ने जोधपुर स्थित मेहरानगढ़ का किला और उम्मेद पैलेस के साथ जैसलमेर से 35 किलोमीटर दूर स्थित सम गांव के करीब रेगिस्तान को देखा और डेजर्ट सफारी के साथ रेगिस्तान का जहाज अर्थात ऊंट की सवारी का आनंद भी लिया। इस दौरान एक तरफ विद्यार्थियों को पश्चिम राजधानी दुग्ध उत्पाद सहकारी सघं लिमिटेड (सरस डेयरी) का वाह्य और आंतरिक भ्रमण कर दुग्ध उत्पादन से लेकर

फीचर राइटिंग, फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी स्किल को विकसित करने में सहायक है शैक्षिक भ्रमण

शेष पृष्ठ 02 पर.....

पृष्ठ 02 का शेष.....

उसके पैकिंग, अन्य खाद्य पदार्थ के निर्माण और उसकी सम्पूर्ण संचालन प्रणाली के बारे में बहुत ही बारीकी से समझने का मौका मिला। दूसरी ओर भारत के भौगोलिक दृष्टिकोण से सबसे बड़े राज्य राजस्थान की लोक कलाओं, संस्कृति, राजे–रजवाड़ों और उनके शानों–शौकत तथा तत्कालीन समय में उनकी सुरक्षा व्यवस्था को समझने का अवसर मिला। यह पांच दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण ट्रेन और बस के द्वारा 29 अक्टूबर से लेकर तीन नवंबर तक डॉ. वंदना राघव और डॉ. शम्भू शरण गुप्त के नेतृत्व में सकुशल संपन्न हुआ।

प्रस्तुतिः-
शम्भू शरण गुप्ता

CHILDREN'S DAY

The First Children's Day In India Was Celebrated On 14th November 1964. Since 1959, The World Children's Day Was Celebrated On 20th November Every Year Marking The Un Adoption Of Declaration Of The Rights Of The Child, 1959. After The Death Of Jawaharlal Nehru In May, 1964, It Was Decided Unanimously To Celebrate The Children's Day On 14th November In India Every Year Commemorating The Birthday Of Jawaharlal Nehru, Who Was Very Much Fond Of Children. Ever Since That Day The Children's Day Is Celebrated On 14th November Every Year. Children's day (also known as Bal Divas) in India is celebrated every year on 14th of November to increase the awareness of people towards the rights, care and education of children. Children are the key of success and development of the country as they would lead their country in different and new technological way. They are adorable and shine same like the precious pearls. Children are the God gifts to their parents by the almighty. They are innocent, admirable, and pure and loved by everyone. 14th of November (birthday of Pt. Jawaharlal Nehru) has been set to celebrate as children's day all over the India. 14th of November is the birth date of the first Indian prime minister, Pt. Jawaharlal Nehru. He became the prime minister of India just after the independence of India. The Children's Day is celebrated every year to let the people specially parents aware about the importance of celebrating this day. The birthday of Chacha Nehru, a great Indian leader, is celebrated as Children's Day. He worked great for the well-being of children as well as youngsters after the independence of India. He worked so much for the education, progress and welfare of the children of India. He was very affectionate towards children and became famous as Chacha Nehru among them. For the progress and development of the youth of India, he had established various educational institutions such as Indian Institutes of Technology, All India Institute of Medical Sciences and Indian Institutes of Management.

He made a five year plan which includes free primary education, free meals including milk to the school children in order to prevent children from malnutrition in India. The deep love and fervor of Chacha Nehru towards the children is the big reason of celebrating the Children's Day at his birthday anniversary.

The childhood is the great moments in the life of everybody which should be necessarily given a right track to become successful in the future as an asset of the country. Without the right track they may miss living a good life. This can be done only by giving a right education, care and way to progress.

Piyush Lodha

चेयरमैन ने दी दिवाली मनाने का संदेश

नई दिल्ली, 06 नवंबर, 2018

दिवाली की पूर्व संध्या पर टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के टेक्निया ऑडिटोरियम में आज एक दीवाली शुभकामना संदेश, सांस्कृतिक कार्यक्रम और भोज कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. राम कैलाश गुप्ता, चेयरमैन, डॉ. अजय कुमार राठौर, डायरेक्टर और डॉ. ए. के. श्रीवास्तव के हाथों संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस शुभकामना संदेश और सांस्कृतिक कार्यक्रम में श्रीमती कुसुम गुप्ता की विशेष उपस्थिती रही। अपने शुभकामना संदेश में डॉ. राम कैलाश गुप्ता ने कहा कि दिवाली लक्ष्मी की पुजा और आराधना का पर्व होने के साथ–साथ जग में व्याप्त अंधेरे को खत्म करने का पर्व है। इस दिन मात्र तेल ही नहीं बल्कि ज्ञान रूपी दीपक से प्रकाश करने की जरूरत होती है। बच्चे मात्र पटाके ही नहीं फोड़ते हैं बल्कि दीवाली की रात देर तक अध्ययन करते हैं। दीवाली विजय का भी प्रतीक है। इस बीच उन्होंने एक गीत के माध्यम से शिक्षकों और कर्मचारियों का उत्साह बढ़ाया। डॉ. अजय कुमार राठौर, डायरेक्टर और डॉ. ए. के. श्रीवास्तव, मुख्य कार्यकारी अधिकारी ने भी अपने गीतों के अंदाज से सभी को दीवाली का संदेश दिये। पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के अभिव्यक्ति क्लब द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में एकल गीत–संगीत के साथ एकल नृत्य कार्यक्रम की प्रस्तुतियों के द्वारा दर्शक दीर्घा में बैठे सभी लोग झूम उठे। सभी के चेहरे पर दिवाली का उत्साह और उमंग दिखाई दे रहा था। एक–दूसरे को दिवाली की बंधाइयाँ और शुभकामनाएं देने में सभी शिक्षक और कर्मचारी मस्त और व्यस्त दिखाई दे रहे थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि दिवाली आज ही है। वैसे भी दिवाली मात्र एक दिन का पर्व नहीं होता है बल्कि पूरे एक सप्ताह तक अर्थात छोटी दिवाली से लेकर पूरे सात दिनों तक दिवाली पर्व हर्षोल्लास के साथ पूरे देश में मनाया जाता है। इस अवसर पर पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के शिक्षक अजॉय राय, सोनिया बत्रा, आकांक्षा सिंह, डॉ. संजय श्रीवास्तव और अभीक अरोरा ने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन हनी शाह, असिस्टेंट प्रोफेसर ने किया। इस अवसर पर टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज, टेक्निया इंटरनेशनल स्कूल, अष्टावक्रा इंस्टीट्यूट ऑफ रिहैबिलेशन साइंस एवं रिसर्च के सभी शिक्षक और कर्मचारी उपस्थित थे।

प्रस्तुतिः-

शम्भू शरण गुप्ता

दिवाली शुभकामना संदेश की कुछ छलकियां...

गंगा और बनारस की देव-दिवाली

भारत में दिवाली सबसे बड़ा उत्सव माना जाता है। वैसे तो देश भर में दिवाली बड़े उत्साह और उल्लास के साथ मनाई जाती है। ऐसा माना जाता है कि दिवाली के साथ उत्सवों और खुशियों का आगमन हो गया है। जब गुलाबी सर्दी की आहट होती है। दिवाली के बाद कार्तिक पूर्णिमा के दिन बनारस में देव दिवाली मनाई जाती है। यह पर्व है जनमानस के हर्ष और उल्लास का। यूं तो काशी देश की पवित्र सप्तपुरियों में से एक है। यह स्थान प्रसिद्ध है सैंकड़ों मंदिरों, घाटों, पुरातन परंपराओं की धरती और जीवनदायनी माँ गंगा के लिए। बनारस की गिनती विश्व के उन प्राचीनतम जीवित शहरों में होती है जोकि अनन्त काल से धरती पर जीवित हैं। शायद इसीलिए इस पावन धरती पर अनेक पर्व और उत्सव वर्ष भर मनाए जाते हैं। इन उत्सवों के प्रति जनसामान्य में एक अद्भुत आकर्षण और गहन आस्था है। यह पर्व बनारस की प्राचीन संस्कृति का खास अंग है। देव दिवाली बनारस की पर्व परंपरा की एक ऐसी कड़ी है, जहां बनारस के लोग मानते हैं कि जब धरती पर रहने वाले लोग दिवाली मना लेते हैं तो उसके एक पक्ष बाद कार्तिक पूर्णिमा पर देवताओं की दिवाली होती है। जिसे मनाने के लिए देवता स्वर्ग से गंगा के पावन घाटों पर अदृश्य रूप में अवतरित होते हैं। उन्हीं देवताओं के लिए बनारस में गंगा घाट के किनारे इस देव दिवाली का कार्यक्रम का आयोजन पूरे भक्ति भाव से किया जाता है। देव दिवाली के दिन शहर का हर व्यक्ति, समूह, संगठन, संस्था के लोग अपनी आस्था और सामर्थ के अनुसार गंगा के घाटों को दीपकों से सजाने आते हैं। इस पर्व पर है बाबा विश्वनाथ की काशी नगरी में जन्मे हर व्यक्ति यहाँ की परंपरा से जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। दिन भर लोग बाजार से दीपक आदि की खरीदारी करते हैं और शाम होते–होते गंगा घाटों की ओर चल पड़ते हैं। स्थानीय प्रशासन और उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग मिलकर इस पर्व का आयोजन गंगा महोत्सव के रूप में एक खास उत्सव के तौर पर करते हैं। यह महोत्सव पांच दिनों तक चलता है। इस पांच दिवसीय महोत्सव के दौरान यहां अनेक प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। उनमें शास्त्रीय संगीत की अनेक नामचीन हस्तियां अपनी मनमोहक प्रस्तुतियों से भाव विभोर कर देती हैं। ऐसे कार्यक्रमों में विदेशी सैलानियों की संख्या भी बहुत होती है। गंगा महोत्सव पर लगने वाले शिल्प मेले में सैलानी उत्तर प्रदेश की लोक शिल्प कलाओं से रूबरू होने के अलावा मनपसंद शिल्प खरीदते भी हैं। गंगा महोत्सव के अन्तिम दिन कार्तिक पूर्णिमा पर उत्सव का भव्य रूप देखने को मिलता है, जब गंगा के पवित्र घाटों पर श्रद्धालुओं द्वारा अनगिनत दीपक जलाए जाते हैं, जो एक अलौकिक दृश्य होता है। यहाँ के स्थानीय लोग और नगर निगम मिलकर कई दिन पहले से ही

घाटों की साफ–सफाई करवाते हैं और देव–दिवाली वाले दिन लोग बढ़ा–चढ़ कर इन घाटों पर दृश्य आते हैं। सभी घाटों पर महिलाएं पूजा अर्चना में लगी होती है। दोपहर बाद से दीपक लगाना शुरू किया जाता है और शाम होने तक सारे घाट दीपकों से भर जाते हैं। इस अदभुत दृश्य को देखने के लिए लोग दूर–दूर से आते हैं। देशी–विदेशी सैलानी नौका विहार से इस पूरे अनुपम द्रश्य का अवलोकन करते हैं। दीप श्रृंखलाओं को देख लगता है मानो आसमान के टिमटिमाते तारे धरती पर उतर आए हों। घाटों पर शाम से ही देखने वालों की भीड़ जुट जाती है और रात होते ही बहुत भीड़ हो जाती है। लोग गंगा में फूल और दीप दान का विसर्जन करने लगते हैं। देव दिवाली का पूरा मजा लेने के लिए आप दोपहर बाद ही अस्सी घाट पर पहुँच जाएं। अस्सी घाट गंगाघाटों में सबसे आखिर में स्थित है। गंगा सेवा समिति इस घाट पर भी पूजा की व्यवस्था करती है। अगर आप नौका विहार करते हुए देव दिवाली देखना चाहते हैं तो आपको नौकायें यहीं से मिलेगी। अस्सी घाट से लेकर हरिश्चन्द्र घाट, दशाश्वमेध घाट, राजेन्द्र प्रसाद घाट जहाँ तक नजर जाए घाट दीपकों की रौशनी से भर जाते हैं। यहाँ 80 से अधिक घाट मौजूद हैं। केदार घाट पर एक प्रसिद्ध कुण्ड है। ऐसी मान्यता है की यहाँ पर संतान के लिए मन्नत मांगने पर पूरी होती है। यहाँ जितने भी घाट हैं सबके साथ कुछ ऐतिहासिक जुड़ाव है। अधिकतर घाट राजाओं द्वारा बनवाए गए थे। जैसे जानकी घाट सुरसन्द एस्टेट की रानी ने, पंचकोट घाट मध्यप्रदेश के राजा ने और मनमंदिर घाट जयपुर के राजा जयसिंह ने बनवाया था। शाम गहराते ही राजेन्द्र प्रसाद घाट पर महाआरती प्रारम्भ ह ा` जाती है। पंक्तियों से लगे पुजारी हाथों में बड़ा सा दीपदान लिए माँ गंगा की आरती करने में इस तरह विलीन हो जाते है कि दर्शक भी उसी अंदाज में झूमने लगते हैं और धूप–लोहबान की सुगन्ध से मन को मोहने लगती है। मां गंगा की महाआरती में पुरोहितों के मुख से मंत्र फूटते ही हर–हर गंगे का जयघोष नाद चारों दिशाओं में गुंजायमान होने लगता है। शंखनाद, डमरू और घंटा–घडियाल की टनकार ऐसी होती है कि मानो स्वर्ग में विराजे देव स्वयं इस बनारस की धरती पर पधार चुके हों। ये अलौकिक दृश्य आँखों के सामने ऐसी दिव्य छटा बिखेरती है कि सचमुच ऐसा लगता है कि अगर जमीन पर कहीं स्वर्ग है तो वह बनारस है। मैसूर का प्रसिद्ध दशहरा पर्व की भांति इस देव–दिवाली को लोग दूर–दूर से देखने आते हैं। यह एक विश्व प्रसिद्ध पर्व है जिसे देखने के लिए लोग विदेशों से भी आते हैं। इन दिनों बनारस के होटल पूरी तरह से देश और विदेश से आए दर्शकों से भरे होते हैं।

प्रस्तुतिः-
वैभव गुप्ता

संपादक की कलम से

विकास का पैमाना और मजबूत लोकतंत्र

किसी भी देश के चुनाव में राष्ट्र का विकास और मानव संसाधन से जुड़े मुख्य मुद्दे होते ही हैं। पार्टियां अपने–अपने घोषणाओं के माध्यम से जनता–जनार्दन का वोट प्राप्त कर अपनी सरकार बनाना चाहती है। आस्ट्रेलिया जैसे देश की बात करें तो हम देखते हैं कि दो से तीन प्रमुख मुद्दे होते हैं जिसे पार्टियां अपनी घोषणा पत्रों में देती है और जनता भी उन्हीं मुद्दों के आधार पर उनमें से अपना चुनाव करती है जिससे मानव संसाधन के साथ–साथ देश का भी विकास होता है। लेकिन क्या हम और हमारे देश की राजनीतिक पार्टियाँ ऐसा करती हैं। अगर ऐसा करती हैं तो अभी भी हम और हमारे गांव के लोग विकास से इतने पीछे क्यों हैं? बेरोजगारी, शिक्षा, गरीबी, लाचारी, भ्रष्टाचार, स्वास्थ्य, विकास, गांव के खेत–खलिहान और किसान जैसे मूलभूत समस्याओं से आम जन पीड़ित है। जिस तरह से चुनाव (वोट देना) लोकतंत्र की गहरी जड़ों तक अपने रिश्ते को जोड़ चुकी है, ठीक उसी तरह विकास भी लोकतंत्र के उन गहरे जड़ों से कब जुड़ेगी? भारत में यह एक यक्ष प्रश्न की तरह दिखाई देता है। इन समस्याओं से निजात विकास और लोकतंत्र के बीच की कड़ी को मजबूत करने से ही प्राप्त की जा सकती है। राजनीतिक पार्टियों को लोकतंत्र के साथ विकास एक ऐसा मुद्दा है जिसके सामने हर मुद्दा फेल हो सकता है। आज राजनीतिक पार्टियों दारा संचालित माध्यमों की शक्ति लोगों की चेतना और चिंतन शक्ति को दिग्भ्रमित करने में तेज है, परिणामस्वरूप पासा पलटने की संभावना भी अधिक है। इस संदर्भ में गांधी जी के निम्नलिखित विचार अति प्रासंगिक हैं – महात्मा गांधी गांवों को एक राष्ट्र में उत्पादन की सबसे छोटी इकाई के रूप में देखते थे। गांवों को लोकतांत्रिक रूप से चलाया जाता था, जहां शासक लोगों के हित के लिए काम करता था। सभी को समान अवसर प्रदान किए जाते थे, हिंसा की कोई जगह नहीं थी और जहाँ सभी धर्म और मान्यताओं का आदर किया जाता था। आस्ट्रेलिया के मेलबर्न विश्वविद्यालय के राजनीति विशेषज्ञ डॉ. प्रदीप तनेजा कहते हैं कि आस्ट्रेलिया में चुनावी मुद्दों के रूप में अर्थव्यवस्था सबसे बड़ा मुद्दा होता है। आने वाली पार्टी जो सरकार बनाएगी उसकी आर्थिक नीतियाँ क्या है? उनकी आर्थिक नीतियों का हमारे जेब पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इसके अलावा आम जनता की तरफ से देखा जाए तो दो प्रमुख मुद्दे अच्छी शिक्षा कम से कम खर्चे पर और स्वास्थ्य लाभ की सुविधाएं। शिक्षा नीति क्या होगी और स्वास्थ्य की नीति क्या होगी? इन मुद्दों को लेकर आस्ट्रेलिया की जनता दोनों पार्टियों को लेकर जानना चाहती है। शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिए फेडरल पार्टी प्रतिबद्ध पार्टी के रूप में अपनी नीतियाँ जनता के सामने एक मुद्दे के रूप में रखी हुई हैं। दोनों ही पार्टियों ने अपनी–अपनी घोषणा में आर्थिक नीतियों से जुड़ी हुई काफी बातें कहे हैं। जब तक राजनीतिक पार्टियां वोट की तरह लोकतंत्र के साथ विकास को भी गांवों से नहीं जोड़ेंगे तब तक गांव और गांव से जुड़े जनता का विकास भी संभव नहीं होगा। आंकड़ों के साथ हम भले ही खेलते रहें लेकिन विकास का पैमाना कुछ और कहता रहेगा। जैसा कि मध्य प्रदेश के बीहड़ में चंबल नदी के किनारे स्थित दिन्नपुरा गांव में पीने के लिए शुद्ध पानी, चलने के लिए सड़क की व्यवस्था नहीं है। पानी के लिए अभी भी ग्रामीणों को चंबल नदी पर आश्रित रहना पड़ता है। चंबल नदी में मगरमच्छ भी पाये जाते हैं। दिन्नपुरा गांव के ग्रामीणों को अपने जान को जोखिम में डालकर पानी भरने के लिए जाना होता है। बिजली के नए खंभे विकास की पहली किरण अंधेरे को खत्म तो कर सकती है, पर गांव संपूर्ण विकास से अभी बहुत दूर दिखाई देता है। अगर सचमुच विकसित राष्ट्र की श्रेणी में भारत का नाम दर्ज कराना है तो शिक्षा, स्वास्थ्य, गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों को जड़ से खत्म करने की बहुत ही जरूरत है, जिससे एक मजबूत लोकतंत्र राष्ट्र को मिल सके।

गुम होती गांधी की विचारधारा

जिस देश की पहचान महान आत्मा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से जुड़ी हो यदि वहीं गांधी के आदर्श गुम होने लगे तो इसका अर्थ है कि भारत की धरती से जुड़ी हुई खरी देशभक्ति और निर्मल संस्कृति के संस्कारों का गुम होना है। गांधी के आदर्श और विचार सिर्फ उनके जन्मदिवस पर याद कर लेने मात्र से गांधी के सपनों का भारत नहीं बन सकता है। उसके लिए उनके आदर्शों और विचारों को ग्रहण करने की अवश्यकता है। गांधी जी सदैव यह कहा करते थे अपने किसी विचार व्यवस्था व कार्य में यदि भ्रम उत्पन्न हो जाए, कारणीय–अकारणीय का प्रश्न खड़ा हो जाए तो ये सोचों कि उस विचार और कार्य से देश के अंतिम व्यक्ति का कितना हित होगा और कितना अहित। गांधी की अपनी दृष्टि थी जिसे समग्र भारत की दृष्टि कहते हैं। यह भारत के जीवन दर्शन की दृष्टि थी। जिसमें सादा जीवन, उच्च विचार, अहिंसा और देश–प्रेम का खरा भाव लोगों के मन में हो। ताकि एक विशाल व शांतिप्रिय भारत का निर्माण हो सकें। गांधीजी की राष्ट्र के प्रति त्याग और बलिदान को ध्यान में रखना होगा। उन संघर्षों को याद करना होगा जिसके सहारे इन्होंने देश से ब्रिटिश साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेंका और हम एक आजाद भारत में साँस लेने लगें। गांधी के जीवन में भौतिकता और दिखावा का कोई स्थान नहीं था परंतु आज उसी देश में उन्हीं के वंशज और देशवासी उस विराट व्यक्तित्व की विचारधारा और आदर्शों को छोड़ भौतिकता के पीछे अंधी दौड़ में शामिल होकर मूल को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। कर्म और परिश्रम के साथ शांति और अहिंसा ही गांधीजी के जीवन का मूल मंत्र था। वर्तमान भारत में ही नहीं बल्कि संपूर्ण दुनिया में गांधीजी को जानने वाले सभी हैं। वर्तमान भारत में अहिंसा, शांति, सत्य का पालन, स्वदेशी और संतोषम परम सुखम जैसे मूल मंत्रों के साथ अपना जीवन जीने वाले कम ही नहीं हैं बल्कि ठीक उल्टा प्रभावित होने वाले लोग ज्यादा हैं। अहिंसा की जगह हिंसा, सच की जगह झूठ और सादा जीवन की जगह दिखावा और भौतिकवाद की पराकाष्ठा को ही सर्वोपरि माना जाने लगा है। गांधीजी कभी अपने सपनों के भारत में ऐसा नहीं सोचा होगा कि सिर्फ विशेष दिवसों पर ही आदर्श और विचारों का राग अलाप करने मात्र से ही भारत महान नहीं बनेगा बल्कि उसके लिए उसे अपने जीवन के गहरे अंतःस्थलों में उतारने के साथ जीवन के दैनिक क्रिया–कलापों में उसका प्रयोग करने से ही संभव होगा। तभी हम एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण कर पाएंगे जहां अहिंसा, शांति और सामाजिक समरसता का वातावरण हो ताकि समाज के अंतिम व्यक्ति को भी एक भारतीय होने का गर्व हो और संपूर्ण भारत में भाई–चारे की एक लहर सदैव निर्मलता के साथ बहती रहें।

प्रस्तुतिः-
पुजा कालरा बीए-जेएमसी

IP MEETING

T&P Guest Lecture

Electoral Literacy Club Under SVEEP

THIS MONTH

November 3, 1903 - Panama declared itself independent of Colombia following a revolt engineered by the U.S.

*****

November 3, 1948 - Dewey Defeats Truman banner headline appeared on the front page of theChicago Tribune newspaper. Harry Truman actually defeated Republican candidate Thomas E. Dewey for the presidency.

*****

November 3, 1957 - Soviet Russia launched the world's first inhabited space capsule, Sputnik II, which carried a dog named Laika.

*****

November 3, 1983 - White South Africans voted to allow Indians and "Coloreds" (persons of mixed race) limited power in the government, but continued to exclude blacks.

*****

November 4, 1942 - During World War II, British troops led by Bernard Montgomery defeated the Germans under Erwin Rommel at El Alamein after a twelve-day battle..

*****

November 4, 1862 - Richard Gatling patented his first rapid-fire machine-gun which used revolving barrels rotating around a central mechanism to load, fire, and extract the cartridges.

*****

Compilation: Honey Shah

Eco Club

BASICS OF MEDIA

Extreme long shot (ELS): Shows the object from a great distance. Also called establishing shot.

*****

Clip light: Small internal reflector spotlight that is clipped to pieces of scenery or furniture with a gator clip. Also called PAR (parabolic aluminized reflector) lamp.

*****

Incident light: Light that strikes the object directly from its source. An incident-light reading is the measure of light in foot-candles (or lux) from the object to the light source. The light meter is pointed directly into the light source or toward the camera

*****

House Number: The in-house system of identification for each piece of recorded program material. Called the house number because the code numbers differ from station to station (house to house).

*****

Diffused light: Light that illuminates a relatively large area with an indistinct light beam. Diffused light, created by floodlights, produces soft shadows.

*****

Floor plan: A diagram of scenery and properties drawn onto a grid pattern. Can also refer to floor plan pattern.

Compilation: Rahul Mittal

Vigilance Awareness Week

प्रस्तुतिः-
शम्भू शरण गुप्ता

Vol. 14 **No.** 12
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"I do not consider it an insult, but rather a compliment to be called an agnostic. I do not pretend to know where many ignorant men are sure -- that is all that agnosticism means."

- Clarence Darrow

*****

"Obstacles are those frightful things you see when you take your eyes off your goal."

- Henry Ford

*****

"I'll sleep when I'm dead."

- Warren Zevon

*****

"There are people in the world so hungry, that God cannot appear to them except in the form of bread."

- Mahatma Gandhi

*****

Compilation: Sanjay Srivastava

WINNERS v/s LOOSERS Part-84

As an outsider, looking in
You might wonder why

*****

Winners have dreams;
Losers have schemes

*****

Winners are a part of the team;
Losers are apart from the team.

*****

Winners see the gain;

losers see pain.

*****

Winners see the potential;
Losers see the past.

*****

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **youngstertias@gmail.com**